प्रारंभिक परीक्षा

मारंग बुरु/पारसनाथ पहाड़ी

संदर्भ

झारखंड उच्च न्यायालय ने आदिवासी त्योहारों के दौरान उल्लंघन की शिकायतों के बीच जैन भावनाओं का सम्मान करते हुए पारसनाथ पहाड़ी पर शराब और मांस पर प्रतिबंध लगाने का आदेश दिया।

पारसनाथ पहाड़ी के बारे में -

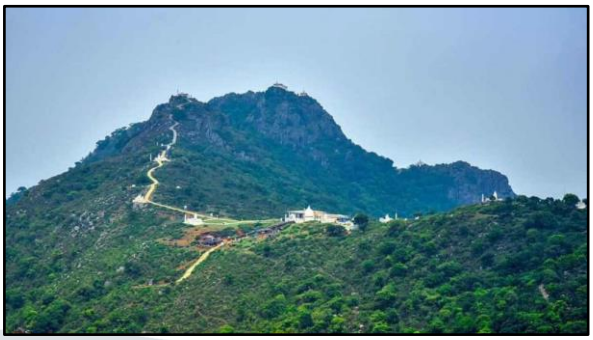

- **पारसनाथ पहाड़ी झारखंड की सबसे ऊँची चोटी (1,365 मीटर) है, जो गिरिडीह जिले में स्थित है।**
- यह जैनियों के लिए एक पवित्र स्थल और आदिवासी संथाल समुदाय के लिए एक पवित्र स्थान है।
- यह पहाड़ी पारसनाथ वन्यजीव अभयारण्य का हिस्सा है, जो एक संरक्षित क्षेत्र है।

धार्मिक एवं सांस्कृतिक महत्व -

- **जैन धर्म:**
  - जैनियों के लिए **सबसे पवित्र तीर्थ स्थल (श्री सम्मेद शिखरजी)** माना जाता है।
  - **ऐसा माना जाता है कि यह वह स्थान है जहाँ 24 में से 20 तीर्थंकरों ने मोक्ष प्राप्त किया था।**
  - पहाड़ी पर कई जैन मंदिर और तीर्थस्थल मौजूद हैं।
- **संथाल जनजाति**:
  - **मारंग बुरु ("महान पर्वत") को उनकी धार्मिक प्रथाओं और सेंद्रा त्यौहार के आयोजन स्थल के लिए एक पवित्र स्थल के रूप में मान्यता देता है।**
  - इस स्थल पर वार्षिक त्यौहार और अनुष्ठान आयोजित किए जाते है।
  - यह स्थल आदिवासी समुदाय के लिए आध्यात्मिक और सांस्कृतिक महत्व रखता है।

ज्ञानपीठ पुरस्कार

संदर्भ

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने 58वें ज्ञानपीठ पुरस्कार (2025) प्रदान किए।

ज्ञानपीठ पुरस्कार के बारे में -

- **स्थापना:** 1961
- **द्वारा**: भारतीय ज्ञानपीठ
- **महत्व: भारत का सर्वोच्च साहित्यिक सम्मान**
- **आवृत्ति: प्रतिवर्ष** प्रदान किया जाता है
- **पात्रता:** भारतीय संविधान की **आठवीं अनुसूची** में सूचीबद्ध भाषाओं में लिखने वाले भारतीय लेखक।
- **पुरस्कार घटक:**
    - प्रशस्ति पट्टिका
    - 11 लाख रुपये का नकद पुरस्कार
    - देवी सरस्वती की कांस्य प्रतिकृति
- **हाल के प्राप्तकर्ता: 2025 (58वाँ ज्ञानपीठ पुरस्कार):**
    - **गुलज़ार:** प्रसिद्ध कवि-गीतकार।
    - **जगद्गुरु रामभद्राचार्य:** प्रतिष्ठित संस्कृत विद्वान और हिंदू आध्यात्मिक नेता।

स्रोत: **PIB: PRESIDENT OF INDIA PRESENTS 58TH JNANPITH AWARD**

राजों की बावड़ी

संदर्भ

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण(ASI) ने राजों की बावड़ी का संरक्षण कार्य पूरा कर लिया है।

राजों की बावड़ी के बारे में -

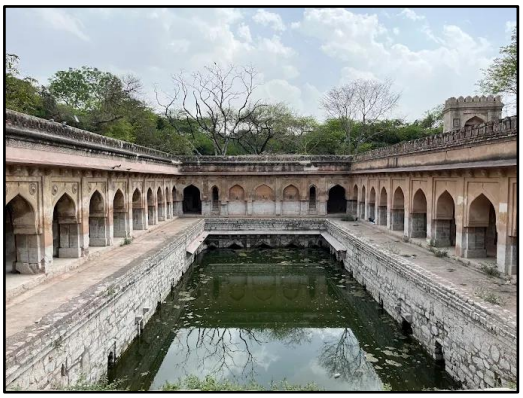

- **प्रकार:** बावड़ी
- **अवधि:** लोधी युग, 16वीं शताब्दी में निर्मित
- **अवस्थिति**: महरौली पुरातत्व पार्क, नई दिल्ली
- **निर्माणकर्ता: दौलत खान (सिकंदर लोदी के दरबार का एक सरदार)।**
- **वास्तुकला विशेषताएँ:**
    - इसमें दोनों तरफ मेहराबदार गलियारे हैं।
    - पारंपरिक चूने के प्लास्टर और गारे का उपयोग करके बनाया गया है।
    - इस परिसर में एक मस्जिद, एक मकबरा और एक छतरी (मंडप) भी है।
    - इसमें कार्यात्मक वास्तुकला और **इंडो-इस्लामिक डिजाइन का मिश्रण** है।
    - मूल रूप से स्थानीय निवासियों और यात्रियों के लिए एक जलाशय के रूप में बनाया गया था।
    - **"राजों" नाम राजमिस्त्री (राज मिस्त्री) को संदर्भित करता है, न कि राजघराने को।**

स्रोत: **The Hindu: ASI completes conservation work in Lodhi-era stepwell**

दाद का टीका और मनोभ्रंश का जोखिम

संदर्भ

लैंसेट हेल्दी लॉन्गविटी में प्रकाशित वेल्स के एक हालिया अध्ययन में पाया गया कि दाद के टीके से मनोभ्रंश विकसित होने का जोखिम काफी कम हो जाता है।

मनोभ्रंश क्या है?

- **मनोभ्रंश (Dementia) स्थितियों का एक समूह है जिसमें मस्तिष्क के कम से कम दो कार्यों में हानि होती है, जैसे स्मृति हानि और निर्णय क्षमता।**
- **अल्ज़ाइमर रोग** इसका सबसे आम रूप है।
- वर्तमान में, मनोभ्रंश के अधिकांश रूपों के लिए कोई प्रभावी टीका या इलाज उपलब्ध नहीं है।

दाद क्या है?

- **कारण**: **वैरिसेला-जोस्टर वायरस के कारण होता है,** वही वायरस जो **चिकनपॉक्स** का कारण बनता है।
    - चिकनपॉक्स के बाद, वायरस तंत्रिका कोशिकाओं में निष्क्रिय रहता है और बाद में पुनः सक्रिय हो सकता है।

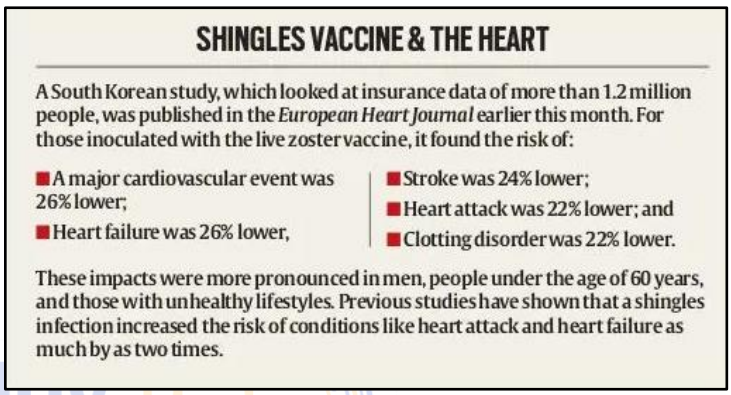

SHINGLES VACCINE & THE HEART

A South Korean study, which looked at insurance data of more than 1.2 million people, was published in the *European Heart Journal* earlier this month. For those inoculated with the live zoster vaccine, it found the risk of:

- A major cardiovascular event was 26% lower;
- Heart failure was 26% lower,
- Stroke was 24% lower;
- Heart attack was 22% lower; and
- Clotting disorder was 22% lower.

These impacts were more pronounced in men, people under the age of 60 years, and those with unhealthy lifestyles. Previous studies have shown that a shingles infection increased the risk of conditions like heart attack and heart failure as much by as two times.

- **लक्षण**: दर्दनाक दाने सबसे आम लक्षण है।
    - यह शरीर के एक तरफ (आमतौर पर धड़) छाले की एक पट्टी के रूप में दिखाई देता है।
    - अन्य लक्षणों में दाने आने से पहले खुजली, जलन या झुनझुनी जैसी अनुभूतियां शामिल हो सकती हैं।
- **संचरण**: दाद स्वयं संक्रामक नहीं है, लेकिन इसका वायरस ऐसे किसी भी व्यक्ति में फैल सकता है जिसे चिकनपॉक्स नहीं हुआ हो।
    - इसका प्रसार दाद के फफोलों से निकलने वाले तरल पदार्थ के सीधे संपर्क या वायरस कणों के साँस के माध्यम से होता है।
- **जटिलताएं**:
    - **पोस्टहरपेटिक न्यूरलजिया (पीएचएन)**: दाने ठीक होने के बाद भी लगातार दर्द होना।
    - यदि आँख के पास हो तो: दृष्टि हानि हो सकती है।
    - चेहरे का पक्षाघात या मस्तिष्क की सूजन (एन्सेफेलाइटिस) हो सकती है।
- **अधिकतर पाया जाता है**:
    - 50 वर्ष से अधिक उम्र के लोगों में आम है।
    - कमजोर प्रतिरक्षा प्रणाली वाले लोगों में जोखिम बढ़ जाता है (जैसे, एचआईवी, कैंसर, अंग प्रत्यारोपण रोगी)।
- **रोकथाम**: दाद का टीका (जैसे, शिंग्रिक्स) वायरस को पुनः सक्रिय होने से रोकने में मदद करता है।
    - 50 वर्ष से अधिक आयु के वयस्कों या प्रतिरक्षाविहीनता की स्थिति वाले कम आयु के वयस्कों के लिए अनुशंसित।
    - एंटीवायरल दवाएं (जैसे, एसाइक्लोविर, वैलेसाइक्लोविर)।
    - दर्द निवारक, सामयिक क्रीम या तंत्रिका अवरोधी दवाओं से दर्द प्रबंधन।

स्रोत: [Indian Express: Shingles Vaccine and Lower Dementia Risks]

भारत में स्थानों का नाम बदलना

संदर्भ

बिहार सरकार ने गया शहर के ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व के कारण इसका नाम बदलकर 'गया जी' करने के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है।

संवैधानिक एवं कानूनी प्रावधान -

- **प्रविष्टि 5, राज्य सूची - अनुसूची VII:** राज्यों को स्थानों (शहरों, कस्बों, गांवों) के नाम बदलने की शक्ति है।
- **अनुच्छेद-3 (राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के लिए):** केवल संसद ही किसी राज्य या केंद्र शासित प्रदेश के नाम, सीमाओं या क्षेत्र में परिवर्तन कर सकती है।
    - यह उन शहरों/कस्बों के नाम बदलने पर लागू नहीं होता है - जो राज्य के अधिकार क्षेत्र में आते हैं।
- **केंद्र सरकार द्वारा अनुमोदन: गृह मंत्रालय (एमएचए) के दिशानिर्देशों के अनुसार:**
    - नाम बदलने का प्रस्ताव राज्य सरकार द्वारा भेजा जाना चाहिए।
    - अंतिम मंजूरी निम्नलिखित के साथ परामर्श के बाद गृह मंत्रालय से मिलती है:
        - भारतीय सर्वेक्षण विभाग
        - डाक विभाग
        - भारत के महापंजीयक
        - रेल मंत्रालय

नाम बदलने के हालिया उदाहरण -

पुराना नाम	**नया नाम**	**राज्य**	**वर्ष**
इलाहाबाद	प्रयागराज	उत्तर प्रदेश	2018
फैजाबाद	अयोध्या	उत्तर प्रदेश	2018
गुडगाँव	गुरुग्राम	हरयाणा	2016
मुगलसराय	पं. दीन दयाल उपाध्याय नगर	उत्तर प्रदेश	2018

स्रोत: [The Hindu: Bihar Government approved to rename Gaya city as 'Gaya Jee']

समुद्रयान मिशन

संदर्भ

'समुद्रयान' मिशन के 2026 के अंत तक प्रक्षेपित होने की उम्मीद है।

समुद्रयान मिशन के बारे में -

- समुद्रयान डीप ओशन मिशन (DOM) के तहत एक महत्वपूर्ण पहल है।
- **इसका उद्देश्य 'मत्स्य 6000' नामक मानवयुक्त पनडुब्बी वाहन का उपयोग करके 6,000 मीटर तक की समुद्री गहराई का अन्वेषण करना है।**
- भारत उन देशों के विशिष्ट समूह में शामिल हो जाएगा - अमेरिका, रूस, चीन, फ्रांस और जापान - जिन्होंने सफल चालक दल वाले गहरे समुद्र मिशन संचालित किए हैं।
- **उद्देश्य एवं अवसर**
    - गहरे समुद्र अनुसंधान में भारत की क्षमताओं को बढ़ाना।
    - सजीव और निर्जीव महासागर संसाधनों का आकलन करने में सक्षम बनाना।
    - महासागर अवलोकन प्रणालियों को मजबूत करना।
    - भविष्य में गहरे समुद्र में पर्यटन की संभावनाओं का पता लगाना।

मत्स्य-6000 के बारे में -

- चौथी पीढ़ी की, स्व-चालित, मानव-रेटेड गहरे समुद्र में चलने वाली पनडुब्बी।
- राष्ट्रीय महासागर प्रौद्योगिकी संस्थान (NIOT), चेन्नई द्वारा विकसित किया जा रहा है।
- इसने सफलतापूर्वक वेट टेस्टिंग पूरी कर ली है।
- **एंड्यूरेंस(Endurance):**
    - सामान्य मिशन के दौरान 12 घंटे।
    - आपातकालीन स्थितियों में 96 घंटे तक।

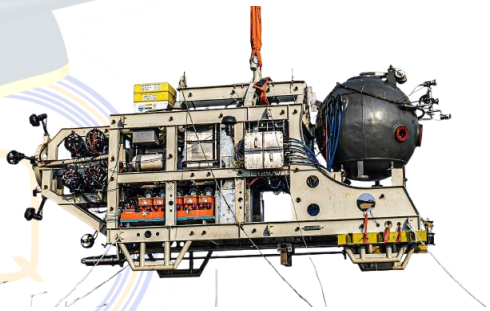

डीप ओशन मिशन (DOM) के बारे में -

- **नोडल मंत्रालय**: पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय।
- **2021 में लॉन्च किया गया, 5 साल का पूरा होने का लक्ष्य है।**
- **उद्देश्य**: गहरे समुद्र के संसाधनों का अन्वेषण करना और टिकाऊ उपयोग के लिए स्वदेशी प्रौद्योगिकियों का विकास करना।
- यह भारत के नीली अर्थव्यवस्था लक्ष्यों का समर्थन करता है।

स्रोत: **The Hindustan Times: 'Samudrayaan': India's first manned deep ocean mission to be launched by 2026 end**

संपादकीय सारांश

युवा पीढ़ी में बढ़ता उच्च रक्तचाप

संदर्भ

पिछली धारणाओं के विपरीत, उच्च रक्तचाप अब केवल वृद्धों तक ही सीमित नहीं रह गया है, बल्कि भारत में यह तेजी से बच्चों और किशोरों को भी प्रभावित कर रहा है।

उच्च रक्तचाप से क्या तात्पर्य है?

- **रक्तचाप से तात्पर्य उस बल से है जिसके द्वारा रक्त धमनियों की दीवारों पर दबाव डालता है, जो शरीर की प्रमुख रक्त वाहिकाएं हैं।**
- उच्च रक्तचाप या हाई ब्लड प्रेशर तब होता है जब यह बल लगातार बहुत अधिक होता है।
- किसी व्यक्ति को उच्च रक्तचाप से ग्रस्त माना जाता है यदि:
    - सिस्टोलिक रक्तचाप **≥ 140 mmHg है, या**
    - डायस्टोलिक रक्तचाप **≥ 90 mmHg है, या**
    - व्यक्ति अपने रक्तचाप को नियंत्रित करने के लिए उच्च रक्तचाप रोधी दवा ले रहा है।

किशोरों में उच्च रक्तचाप को नियंत्रित करने की आवश्यकता -

- **चिंताजनक आंकड़े**:
    - **सीएनएनएस (2016-18):** 7.3% भारतीय किशोरों में रक्तचाप का स्तर उच्च था; शहरी क्षेत्रों में यह आंकड़ा 9.1% था।
    - **एनएफएचएस-5**: 12% किशोरों (15-19 वर्ष) में रक्तचाप बढ़ा हुआ था।
- **विलंबित पहचान**: अधिकांश किशोरों को वयस्क होने तक अपनी स्थिति का पता नहीं चलता, और तब तक स्वास्थ्य संबंधी जटिलताएं पहले से ही शुरू हो चुकी होती हैं।
- **दीर्घकालिक जोखिम**: अनियंत्रित किशोर उच्च रक्तचाप से जीवन में आगे चलकर हृदय संबंधी रोग, गुर्दे की क्षति और स्ट्रोक की संभावना बढ़ जाती है।

किशोरों में उच्च रक्तचाप में वृद्धि से जुड़ी चिंताएँ -

- **बढ़ता बचपन का मोटापा**: खराब आहार और गतिहीन जीवन शैली के कारण बढ़ता बॉडी मास इंडेक्स (बीएमआई) एक प्रमुख जोखिम कारक है।
- **गतिहीन डिजिटल जीवनशैली**: बाहरी गतिविधियों में कमी और स्क्रीन-भारी दिनचर्या रक्तचाप को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक शारीरिक व्यायाम को सीमित करती है।
- **अधिक नमक का सेवन**: किशोर प्रतिदिन 8 ग्राम से अधिक नमक का सेवन करते हैं - जो विश्व स्वास्थ्य संगठन की वयस्क सिफारिश से लगभग दोगुना है।
    - प्रमुख स्रोत: प्रसंस्कृत स्नैक्स, जंक फूड और नमकीन स्ट्रीट फूड।
- **प्रारंभिक आदत का निर्माण**: बच्चों में उच्च नमक, उच्च वसा वाले खाद्य पदार्थों के प्रति रुचि जल्दी विकसित हो जाती है, तथा वे स्वास्थ्यवर्धक विकल्पों को नापसंद करते हैं।
    - ये प्राथमिकताएं दृढ़ हो जाती हैं, जिससे भविष्य में जोखिम बढ़ जाता है।

स्थिति सुधारने के लिए आगे की राह -

- **पीएम पोषण के पोषण लक्ष्यों को मजबूत करना**: कम नमक और तेल के साथ ताजा, क्षेत्रीय रूप से प्रेरित मेनू को शामिल करना।
    - विविधता और मौसमी उपज पर ध्यान केंद्रित करना।
- **स्कूलों में खाद्य साक्षरता को बढ़ावा देना**: **जापान के शोकुइकु मॉडल** के समान पोषण शिक्षा शुरू करना।
    - भोजन विकल्पों की उत्पत्ति और प्रभावों के बारे में सिखाना।

जापान के कदम (शोकुइकु मॉडल)

- खाद्य शिक्षा और स्वस्थ खान-पान की आदतों को बढ़ावा देने के लिए 2005 में शोकुइकू कानून लागू किया गया।
- बच्चे भोजन की योजना बनाने, उसे परोसने और साथ मिलकर खाने में मदद करते हैं, तथा पोषण और भोजन की उत्पत्ति के बारे में व्यावहारिक रूप से सीखते हैं।

वियतनाम के कदम

- 2012 में अजिनोमोटो के साथ मिलकर स्कूल भोजन परियोजना विकसित करने के लिए जापान के मॉडल को अपनाया गया।
- स्कूलों में संतुलित मेनू, पोषण शिक्षा और मॉडल रसोईघर के लिए उपकरण बनाए गए।

- **पैकेज्ड खाद्य पदार्थों में नमक कम करना**: पैक के सामने लेबलिंग अनिवार्य करना।
    - बच्चों के लिए जंक फूड का विपणन सीमित करना।
- **शारीरिक गतिविधि को अनिवार्य बनाना**: सुनिश्चित करना कि शारीरिक व्यायाम दैनिक स्कूल दिनचर्या का हिस्सा हो।
    - खेल, योग और खेलकूद में भागीदारी को बढ़ावा देना।
- **प्रारंभिक जांच और जागरूकता**: स्कूलों में नियमित रूप से रक्तचाप की निगरानी और बीएमआई जांच कराएं।
    - अभिभावकों और शिक्षकों के बीच जागरूकता अभियान चलाएं।
- **स्थानीय समुदायों के साथ सहयोग करना**: घर पर स्वस्थ आदतें बनाए रखने के लिए माता-पिता, आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं और स्थानीय गैर सरकारी संगठनों को शामिल करना।
    - व्यावहारिक शिक्षा के लिए स्कूलों में रसोई उद्यानों को प्रोत्साहित करना।

स्रोत: **The Hindu: Raising healthy hearts: reimagining school nutrition to tackle childhood hypertension**

मणिपुर मुद्दे पर दृष्टिकोण का विरोधाभास

संदर्भ

मणिपुर में संघर्ष दो वर्षों से जारी है, तथा राजनीतिक समाधान अभी भी दूर की कौड़ी लगता है, तथा इसका कोई स्पष्ट अंत भी नजर नहीं आता।

मणिपुर की वर्तमान स्थिति -

- **मैतेई** और **कुकी-ज़ोमी-हमार समुदायों** के बीच दो साल से चल रही **जातीय हिंसा के कारण 250 से ज़्यादा लोगों की मौत हो गई और हज़ारों लोग विस्थापित हो गए।**
- आंतरिक रूप से विस्थापित लोग उप-मानव राहत शिविरों में रह रहे हैं, जहाँ सामान्य स्थिति बहाल करने में बहुत कम प्रगति हुई है।
- जातीय विभाजन और भी बढ़ गया है, और राजनीतिक समाधान अभी भी दूर की कौड़ी है।
- सशस्त्र मिलिशिया और विद्रोही समूह तेज़ी से सक्रिय हो रहे हैं, और कुछ क्षेत्रों में कानून और व्यवस्था की ज़िम्मेदारी घाटी-आधारित सशस्त्र समूहों को सौंपी गई है।

सरकार का रुख -

- केंद्र सरकार ने मणिपुर के संकट को राष्ट्रीय स्तर पर प्राथमिकता नहीं दी है।
- त्रासदी के इतने बड़े पैमाने के बावजूद, प्रधानमंत्री मोदी ने राज्य का दौरा नहीं किया है या कोई विस्तृत रोडमैप प्रस्तुत नहीं किया है।
- राष्ट्रीय सुरक्षा की रूपरेखा को चुनिंदा ढंग से लागू किया गया है - मणिपुर जैसे आंतरिक संघर्षों की तुलना में पाकिस्तान जैसे बाहरी सुरक्षा खतरों पर अधिक ध्यान दिया गया है।

सरकार द्वारा उठाए गए कदम -

युद्धरत समुदायों को अलग करने के लिए अर्धसैनिक बलों द्वारा बनाए गए बफर जोन।

- ऑपरेशन ऑल-क्लियर (2004) ने विद्रोहियों को खदेड़ दिया था, लेकिन अब इसके लाभ ख़त्म हो चुके हैं।
- भाजपा के नेतृत्व वाली राज्य सरकार के गिरने के बाद राष्ट्रपति शासन लागू करना (फरवरी 2025)।
- लूटे गए हथियारों को सौंपने के लिए समय सीमा के साथ हथियार संग्रह अभियान।
- भारत-म्यांमार सीमा पर बाड़ लगाने तथा सीमा पार उग्रवाद को रोकने के लिए मुक्त आवागमन व्यवस्था को रद्द करने के प्रयास।

इन उपायों की कमियां -

- सुरक्षा संबंधी कथन का दुरुपयोग विशिष्ट जातीय समूहों को लक्षित करने के लिए किया जाता है (जैसे, कुकी उग्रवादियों की अतिरंजित धमकियाँ)।
- घाटी आधारित विद्रोही समूह (वीबीआईजी) मजबूत हो गए हैं और अक्सर दंड से मुक्त होकर कार्य करते हैं।
- **हथियारों की बरामदगी अधूरी**: चोरी हुए 6,020 हथियारों में से केवल 4,000 ही वापस किए गए; इनमें से कई पुराने या प्रतीकात्मक हैं।
- बाड़ लगाने और सैन्यीकरण से अलगाव बढ़ सकता है तथा नागा और मिज़ो जैसे सीमावर्ती समुदाय नाराज हो सकते हैं।
- नीति वास्तविक शांति स्थापना या संस्था सुदृढ़ीकरण की अपेक्षा राजनीतिक दृष्टिकोण से अधिक प्रेरित प्रतीत होती है।

आगे की राह -

- **राजनीतिक सहभागिता**: एक तटस्थ मध्यस्थ के तहत मैतेई और कुकी-ज़ोमी-ह्मार दोनों समूहों को शामिल करते हुए समावेशी वार्ता आरंभ करना।

- **राज्य संस्थाओं में विश्वास बहाल करना**: निष्पक्ष कानून प्रवर्तन सुनिश्चित करके पुलिस और प्रशासन की वैधता का पुनर्निर्माण करना।
- **सैन्यीकरण में कमी लाना**: शस्त्रीकरण में कमी, खुफिया जानकारी आधारित प्रति-विद्रोह और सामुदायिक पुलिसिंग पर ध्यान केन्द्रित करना।
- **राष्ट्रीय सुरक्षा दृष्टिकोण पर पुनर्विचार करना**: केवल सुरक्षा-आधारित दृष्टिकोण से आगे बढ़कर मानवीय और शासन-आधारित दृष्टिकोण अपनाएं।
- **पुनर्वास और पुनर्स्थापन**: सम्मान, बुनियादी ढांचे और मनोवैज्ञानिक सहायता के साथ।
- **एक्ट ईस्ट सिनर्जी**: स्थानीय जातीय वास्तविकताओं और सीमा पार संबंधों का सम्मान करते हुए, एक्ट ईस्ट विजन के साथ सीमा नीतियों को संरेखित करना।

स्रोत: **The Hindu: The paradox of the approach to the Manipur issue**

लिंग आधारित पोषण असमानता

संदर्भ

भारत में 800 मिलियन लोगों को मुफ्त खाद्यान्न उपलब्ध कराना, कुपोषण की सतत स्थिति को उजागर करता है, जिसमें महिलाएं और लड़कियां सबसे अधिक उपेक्षित पीड़ित हैं।

पोषण संबंधी लैंगिक असमानता की प्रकृति -

- **असंगत कुपोषण दर**: एनएफएचएस-5 के आंकड़ों से पता चलता है कि 57% महिलाएं (15-49 वर्ष) एनीमिया से पीड़ित हैं, जबकि पुरुषों में यह आंकड़ा 26% है।
- **कम वजन का प्रचलन**: लगभग 18.7% महिलाएं कम वजन की हैं, जो पुरुषों की तुलना में काफी असमानता है।
- **परिवार के भीतर भोजन संबंधी असमानता**: सांस्कृतिक मानदंडों के कारण प्रायः महिलाएं और लड़कियां परिवार में सबसे कम और सबसे अंत में भोजन करती हैं।
- **संसाधन उपयोग अंतराल**: बड़े निवेश (2022-23 में पोषण 2.0 के लिए 24,000 करोड़ रुपये) के बावजूद, केवल 69% धन का उपयोग किया गया, जिससे महिलाओं के पोषण में न्यूनतम सुधार हुआ।
- **एजेंसी का अभाव**: लगभग 49% महिलाओं को अपनी कमाई पर नियंत्रण का अभाव है, जिससे स्वास्थ्य और पोषण को प्राथमिकता देने की उनकी क्षमता प्रभावित होती है।

पोषण संबंधी लैंगिक असमानता के प्रभाव -

- **मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य**: कुपोषित माताओं के कारण जन्म के समय शिशु का वजन कम होता है, विकास अवरुद्ध होता है और शिशु मृत्यु दर बढ़ती है।
- **उत्पादकता में कमी**: खराब पोषण महिलाओं की कार्य क्षमता और आर्थिक भागीदारी को प्रभावित करता है।
- **कुपोषण का अंतर-पीढ़ीगत चक्र**: कुपोषित लड़कियां कुपोषित माताएं बन जाती हैं, जिससे यह चक्र चलता रहता है।
- **स्वास्थ्य प्रणाली पर बोझ**: एनीमिया और कुपोषण के कारण बीमारियों का बोझ और स्वास्थ्य देखभाल की लागत बढ़ती है।
- **लिंग असमानता सुदृढ़ीकरण**: खराब पोषण महिलाओं की निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति को दर्शाता है और उसे मजबूत करता है।

आगे की राह: पोषण असमानता से निपटना -

- **पोषण को सशक्तिकरण से जोड़ना**: एनीमिया और बौनेपन में कमी के साथ-साथ महिलाओं की आय और निर्णय लेने की शक्ति के लिए लक्ष्य निर्धारित करना।
    - आंगनवाड़ी केन्द्रों के माध्यम से कौशल प्रशिक्षण, ऋण पहुंच और रोजगार को बढ़ावा देना।
- **कार्यक्रम वितरण में सुधार**: कुपोषण-प्रवण क्षेत्रों में अंतर-विभागीय अभिसरण (स्वास्थ्य, पोषण, आजीविका) को मजबूत करना।
    - परिणामों पर नज़र रखते हुए पोषण 2.0 निधि का पूर्ण उपयोग सुनिश्चित करना।
- **रोजगार की गुणवत्ता में वृद्धि:** महिलाओं के लिए सुरक्षित, उचित वेतन वाली और सम्मानजनक नौकरियां सुनिश्चित करने के लिए भागीदारी से आगे बढ़ें।
    - लिंग आधारित वेतन अंतर को कम करना और महिला उद्यमिता को समर्थन देना।
- **सामाजिक व्यवहार परिवर्तन संचार (एसबीसीसी)**: उन गहरे पूर्वाग्रहों को संबोधित करना जो महिलाओं की तुलना में पुरुषों के भोजन और स्वास्थ्य को प्राथमिकता देते हैं।
    - पोषण साक्षरता को बढ़ावा देना, विशेष रूप से महिलाओं की विशिष्ट आहार संबंधी आवश्यकताओं के संबंध में।
- **जमीनी स्तर पर कार्यान्वयन को मजबूत करना:** आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को बहु-सेवा सुविधाकर्ता बनने के लिए सशक्त बनाना - पोषण, स्वास्थ्य, आजीविका।

- निगरानी और वितरण में समुदाय आधारित महिला समूहों (जैसे एसएचजी) को शामिल करना।

स्रोत: **The Hindu: The ingredient to turn around nutrition outcomes**

ट्रम्प, सीरिया और मध्य पूर्व

संदर्भ

अमेरिकी राष्ट्रपति और सीरिया के वास्तविक राष्ट्रपति अहमद अल-शरा ने हाल ही में सऊदी क्राउन प्रिंस मोहम्मद बिन सलमान की उपस्थिति में मुलाकात की।

ट्रम्प सीरिया से हाथ क्यों मिला रहे हैं?

- **असद के जाने से अवसर की खिड़की खुली:** बशर अल-असद को हटाकर उनके स्थान पर अहमद अल-शरा को लाने के बाद, ट्रम्प को संबंधों को फिर से स्थापित करने का अवसर दिखाई दे रहा है।
    - प्रतिबंध मुख्य रूप से असद शासन पर लक्षित थे। इसके पतन के साथ, ट्रम्प अमेरिकी मूल्यों से समझौता किए बिना प्रतिबंधों को हटाने को उचित ठहरा सकते हैं।
- **अल-शरा के अधीन उदारवादी और स्थिर नेतृत्व:** अल-शरा ने अपने जिहादी अतीत के बावजूद, स्वयं को एक उदारवादी नेता के रूप में स्थापित किया है, मिलिशिया को एकीकृत किया है और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा दिया है।
    - उनका प्रशासन वैचारिक अतिवाद से बचता है तथा इजरायल को मान्यता देने सहित क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सहभागिता के लिए खुला प्रतीत होता है।
- **ट्रम्प का सिद्धांत: संघर्षों का क्षेत्रीय स्वामित्व:** ट्रम्प मध्य पूर्वी संघर्षों में अमेरिकी सैन्य और वित्तीय भागीदारी को कम करना पसंद करते हैं।
    - सीरिया के पुनर्निर्माण का नेतृत्व करने के लिए क्षेत्रीय शक्तियों (सऊदी, कतर, तुर्की) को प्रोत्साहित करके , ट्रम्प ने जिम्मेदारी को स्थानांतरित कर दिया है, जबकि अभी भी भू-राजनीतिक और आर्थिक रूप से लाभ उठा रहे हैं।
- **विचारधारा से ज़्यादा व्यापार:** ट्रम्प की कूटनीति व्यापार-केंद्रित है। खाड़ी देशों ने अमेरिका के साथ रियल एस्टेट, विमानन, हथियार और प्रौद्योगिकी सहित सैकड़ों अरबों के सौदे करने का वादा किया है।
    - सीरिया पर प्रतिबंध हटने से खाड़ी देशों को सीरिया के पुनर्निर्माण में निवेश करने में सुविधा होगी, जिससे अप्रत्यक्ष रूप से अमेरिकी व्यापारिक हितों को लाभ होगा।
- **ईरान के साथ सहभागिता के माध्यम से प्रतिसंतुलन:** अल-शरा जैसे गैर-ईरानी-गठबंधन वाले नेता के तहत सीरिया को क्षेत्रीय ढांचे में पुनः शामिल करने से ईरानी प्रभाव को कम करने में मदद मिलेगी।
    - प्रतिबंधों को हटाना एक व्यापक क्षेत्रीय पुनर्संतुलन का भी हिस्सा है, जो संभवतः ईरान के साथ परमाणु समझौते से जुड़ा हुआ है।
- **इजरायल की चिंताओं को कमतर आंकना:** ऐसा प्रतीत होता है कि ट्रम्प इजरायल की आपत्तियों को दरकिनार करने के लिए तैयार हैं, यदि वे व्यापक क्षेत्रीय पुनर्संरेखण और व्यापार अवसरों के साथ टकराव पैदा करती हैं।
    - नेतन्याहू के विरोध के बावजूद ट्रम्प ने तुर्की के साथ हथियार समझौते और सीरिया के साथ पुनः संपर्क स्थापित किया।

सीरिया के प्रति ट्रम्प के झुकाव के निहितार्थ -

- **मध्य पूर्व में भू-राजनीतिक पुनर्संरेखण:** अल-शरा के तहत सीरिया का पुनः एकीकरण सऊदी, कतर, तुर्की को शामिल करते हुए एक नई क्षेत्रीय व्यवस्था को जन्म दे सकता है - जिसमें अमेरिकी सैन्य भागीदारी कम होगी।
    - पारंपरिक गठबंधन (जैसे अमेरिका-इज़राइल) अधिक लेन-देन आधारित और कम मूल्य-संचालित हो सकते हैं।
- **मानवाधिकारों और लोकतंत्र पर कमजोर प्रभाव:** बिना किसी सख्त शर्त के प्रतिबंधों को हटाने से मानवाधिकारों पर अमेरिका की स्थिति कमजोर हो सकती है, विशेष रूप से अल-शरा के उग्रवादी अतीत को देखते हुए।
    - यह एक मिसाल कायम करता है कि आर्थिक व्यावहारिकता अतीत के आतंकवादी संबंधों को खत्म कर सकती है।

- **सशक्त खाड़ी राज्य:** सऊदी अरब, कतर और संयुक्त अरब अमीरात युद्धोत्तर सीरिया को आकार देने में बड़ी भूमिका निभाएंगे, जिससे उनका क्षेत्रीय प्रभाव बढ़ेगा।
    - इससे या तो क्षेत्र में स्थिरता आ सकती है या नए सत्ता संघर्ष को बढ़ावा मिल सकता है, जो इस बात पर निर्भर करेगा कि प्रतिद्वंद्विता का प्रबंधन किस प्रकार किया जाता है।
- **तुर्की-अमेरिका सुलह:** एस-400 और कुर्द मुद्दों पर पिछले तनाव के बावजूद, अमेरिका तुर्की के साथ पुनः बातचीत करता दिख रहा है।
    - एफ-35 कार्यक्रम जैसे नाटो रक्षा पहलों में तुर्की की भूमिका बहाल हो सकती है।
- **अमेरिकी सैन्य वृद्धि का कम जोखिम:** ट्रम्प का निर्णय सीरिया और इराक में हस्तक्षेपवाद से व्यापक रूप से पीछे हटने के साथ संरेखित है।
    - इससे अमेरिका को मध्य पूर्वी उलझनों के बजाय महाशक्तियों (चीन, रूस) के साथ प्रतिस्पर्धा पर ध्यान केंद्रित करने में मदद मिलेगी।
- **इजरायल का सामरिक अलगाव:** यदि अमेरिका इजरायल की सुरक्षा चिंताओं की तुलना में व्यापार और क्षेत्रीय शांति को प्राथमिकता देता है, तो इजरायल खुद को अलग-थलग महसूस कर सकता है , विशेष रूप से ईरान और सीरिया के संबंध में।
    - इजरायल को अपने हितों की रक्षा के लिए एकतरफा कार्रवाई करने के लिए मजबूर कर सकता है।

स्रोत: **Indian Express: Trump, Syria & the Middle East**